पुलिस से डर नहीं लगता... साहब...!

वेनिस फिल्म फेस्टिवल का अनुभव हमेशा खुशनुमा रहा है। वजह यह है कि यहां पुलिसवाले दोस्ताना बर्ताव करते हैं और हर परेशानी के लिए हाजिर रहते हैं, जबकि फ्रांस के कान फिल्म फेस्टिवल में ऐसा नहीं है। मई में जब कान फिल्म फेस्टिवल हुआ था, तब वहां सुरक्षा के कड़े इंतजाम थे। वो आतंकियों के निशाने पर रहा है।

वेनिस से गौतमन भास्करन

कोई पांच हजार पत्रकार वहां आए थे, जो बारह दिन के इस फेस्टिवल में रोज कई फिल्में देखते थे। इस बीच, शहर के लोगों की हालत किसी बंधक की तरह हो जाती थी। इटली में ऐसा नहीं है। फ्रांस की तुलना में इटली आतंकियों की निगाह से बच रहा है, जबकि यूरोप का हर देश निशाने पर है। इटली का खूबसूरत द्वीप लीडो, वेनिस फिल्म फेस्टिवल की मेजबानी के लिए सज-धज कर तैयार है। यहां सुरक्षा की कोई चिंता नहीं है। कई दशक से यह द्वीप इसका गवाह है। इस बार वेनिस फिल्म फेस्टिवल का यह 74वां आयोजन है। कई चेक पाइंट पर गन लिए यूनिफार्म में पुलिस नजर आ रही है, लेकिन उन्हें देख कर लगता नहीं कि किसी अनहोनी का डर हो। वे मुस्करा कर स्वागत कर रहे हैं। साइकल पर

यहां के सुरक्षा इंतजाम की तफ्तीश करते इन पुलिसवालों की विनम्रता की तारीफ की जाना चाहिए, जो इस फेस्टिवल को खुशनुमा बना रहे हैं। मौसम भी सुहाना है और हर बैरिकेड पर खड़ा पुलिसवाला मुझसे मुस्करा कर मिल रहा है। बुधवार की रात जब मैं फिल्म देख कर लौट रहा था, तो सिपाही ने मुझसे गुड नाइट कहा और बोला- स्लीप वेल सर।

वेनिस में फिल्मी सितारों का क्रैज सिर चढ़ कर बोल रहा है। मैंने तमिलनाडु में देखा है। कई चाहने वाले, फिल्मी सितारों की पूजा करते हैं। इसे उनकी दीवानगी ही कहें कि वे लोग पढ़े-लिखे हैं, लेकिन जब भी पसंदीदा सितारे की फिल्म लगती है, तो उसका जश्न मनाते हैं, पटाखे फोड़ते हैं, बड़े-बड़े पोस्टर लगाते हैं। इतना ही नहीं, दूध से अभिषेक करते हैं और फूल मालाएं पहनाते हैं। ऐसा ही कुछ यहां वेनिस में नजर आ रहा है। बेशक, यूरोप के कई देशों के लोग यहां आए हैं और अपने पसंदीदा कलाकार के लिए उनकी दीवानगी जाहिर कर रहे हैं, जबकि भारत में फैंस कई बार बेकाबू हो जाते हैं।

वेनिस में जहां-जहां फिल्म रिलीज हो रही है और जहां भी बड़े फिल्मी सितारे पहुंच रहे हैं, वहां उनके चाहने वालों की कतारें नजर आ रही हैं, जो बहुत ही शालीनता से अपने प्रिय सितारे को लाल कालीन पर चलते देख रहे हैं और उसकी मौजूदगी का मजा ले रहे हैं। इस फेस्टिवल की पहली रात मेट डेमोन जैसे लोग भी दिखे, जो फिल्म 'डाउन सिजलिंग' का हिस्सा हैं और एथॉन हॉक भी लाल कालीन पर नजर आए, जिन्हें व्हिस्की का पुजारी कहा जाता है, जो बढ़ती आबादी, ग्लोबल वार्मिंग, वेस्ट मैनेजमेंट और आतंक जैसे विषयों पर काम करने के लिए जाने जाते हैं। इन दोनों ने अपने फैंस से तारीफें ही नहीं बटोरीं, बल्कि उनके साथ तस्वीरें भी खिंचवाईं। अपने फैंस के लिए भी उतना ही प्यार दिखाया, जितना फैंस उनसे दिखा रहे थे। ये किसी सितारे के लिए सबसे अच्छी बात होती है। ऐसे में कौन कहता है कि भारतीय कलाकार ही बड़े सितारे हैं। यहां तो कई सितारे जगमगा रहे हैं।